"मिल-जुल कर रह सकते हैं सब, दिल हम यदि विशाल बनायें ।"

मेरी पत्नी ने पूछा ,"इस बार की समस्या क्या है ?"
मैं बोला ,"नहीं जानती । 'मिल-जुल कर रह सकते हैं सब, दिल हम यदि विशाल बनायें ।"
पत्नी बोली,"ये समस्या थोडे ही है? .....ये तो समाधान है ।
मैंने पूछा ,"फिर समस्या क्या है ?"
पत्नी बोली,"दिल का विशाल न होना ही, सारी समस्या है ।
इसीलिए घर-घर में देखो अमावस्या है ।
नहीं दीप जलते, दिवाली में दिल के,
नहीं रह पाते,एक ही घर में,सभी, मिल-जुल के ।
मियाँ-बीबी में अनबन, बाप-बेटे में तकरार,
टूटते हुए रिश्ते, बिखरता परिवार
घर के टेलीफोन से दिल्ली-अमरीका तक, हेल्लो, हाउ आर यू हो जाती है,
वहीं एक कमरे में, बहू और सास,जब देखो अपने मुह को फुलाती हैं।
देवरानी-जेठानी ,तो बात-बात पर महाभारत रचाती हैं ।
अपने अलावा, किसी का भला भी ,सोच नहीं पाती हैं ।"
मैंने कहा," इसी सोच को ही तो बदलना है ।
वर्ना सुयोधन की तरह, सबको हाथ मलना है ।"
पत्नी बोली,"सुयोधन कि दुर्योधन ?"
मैंने कहा," भाग्यवान! दुर्योधन का असली नाम सुयोधन था ।
आज जहाँ, दो भाई भी साथ नहीं रह पाते हैं ।
वहीं दुर्योधन, दो नहीं-चार नहीं, सौ कौरवों के साथ, बडे प्यार से, मिल-जुल कर रह सकता था ।
लेकिन, अपने भाई पाँच पांडवों को, पाँच गाँव तो क्या सुई भर भूमि भी, लडे बिना, नहीं दे सकता था ।
ये खुदगर्ज़ी और लालच ही संकीर्णता बढाती हैं
दिल के वाल्व को चोक-अप कर जाती हैं ।
सोचो, दुर्योधन का दिल,यदि थोडा विशाल हो जाता
तो सच कहता हूँ, महाभारत में दुर्योधन, सुयोधन ही कहलाता ।
दिल में विशालता हो तो चरण-पादुकायें भी, शासन चलाती हैं ।
अयोध्या की नगरी, भी ,स्वर्ग से बढकर, राम-राज्य कहलाती हैं ।"
पत्नी ने टोका, कहा, वहाँ भी एक धोबी था ।
मैने कहा,"वह भी,दिल की क्षुद्रता का सबसे बडा रोगी था ।
यदि उसका हृदय होता विशाल
तो लव और कुश का नहीं होता हाल ।"

पत्नी बोली,"तब तो रामायण बदल जाती,
पति और पुत्रों के संग, सीतामाता मुस्करातीं ।"
मैने कहा," संकीर्णता हृदय की , मिलने नहीं देती ।
प्रसन्नता का पुष्प, खिलने नहीं देती ।।
प्यार से कोई कैसे मिले, जब हम दिल के ऑगन में,संकीर्णता की दीवार खडी करते हैं ।
अपने ही बनाये, झूठे अभिमान के, आजन्म कारावास में,घुट-घुट कर मरते हैं ।
श्रीमती जी बोलीं," जब तक दिलों से दीवार ना गिरेगी ।
तब तक मनुष्यता, आहें भरेगी ।"
मैंने कहा,"सच, यदि दिल विशाल हो, तो, छोटी-सी दिल्ली में भी विश्व सिमट आयेगा ।
दिल की विशालता में, 'वसुधैव कुटुम्बकम क्या, संसार का रचयिता, निरंकार बस जायेगा ।।

कपिल कुमार सरोज